यह एक युद्ध है!

(6:10-12)

मेरा एक दोस्त बिली पुलिस में नौकरी करता है। 1994 में बिली और कुछ अन्य अधिकारी फोर्ट वर्थ, टैज़्सस में एक घर की तलाशी लेने गए। वहां गोलियां चल गईं। एक गोली बिली की टांग में लगी। उसके शरीर से होते हुए गोली एक धमनी तक पहुंच गई। बिली का बहुत खून बहा। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह बच गया!

मौत के साथ बिली का सामना होने की घटना से मुझे एक पुलिसमैन के बारे में देखी बहुत साल पुरानी फिल्म याद आती है। एक दृश्य में, वह अस्पताल में अपने साथी के बिस्तर के पास बैठा है,जिसे गोली लगने से बड़ी गंभीर चोटें आई हैं। उस आदमी की पत्नी वहीं है। वह उस सिपाही को ओर देखते हुए, आंखों में आंसू भरकर कहती है, ''मुझे नहीं पता था ... मैंने नहीं सोचा था कि यह सचमुच एक युद्ध है। बाहर तो युद्ध छिड़ा हुआ है, है न?''

इफिसुस के मसीहियों के नाम अपने पत्र को बंद करते हुए पौलुस ने मसीही जीवन के बारे में ऐसी ही टिप्पणी की थी: ''हमारा यह मल्लयुद्ध है।'' वह हमें बताता है कि हम जीवन के सफ़र को आसान न मानें। मसीहियत ''अन्त तक लड़ा जाने वाला'' एक संघर्ष अर्थात युद्ध, है।

इस अलौकिक युद्ध को हम में से कोई भी अपने बूते जीत नहीं सकता। इसे जीतने का एकमात्र सज़्भव ढंग उस सामर्थ से लड़ाई करना है,जो परमेश्वर हमें देता है और उस हथियार से लड़ना है,जो वह हमें देता है:

> निदान, प्रभु में और उस की शज़्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युज़्तियों के साज़्हने खड़े रह सको। ज़्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और सांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं (6:10-12)।

पौलुस की बातों से हमें यह सच्चाई मिलती है: *मसीही लोग शैतान के विरुद्ध युद्ध परमेश्वर की युद्ध की योजना के अनुसार ही जीत पाते हैं।*

युद्ध जीतने के लिए लड़ाई की तैयारी करना आवश्यक है

आत्मिक लड़ाई में जो शज़्ति हमें चाहिए वह हमारे अपने अन्दर से नहीं आती; यह

परमेश्वर की ओर से मिलती है। पौलुस ने कहा, ''प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवंत बनो।'' मूलत:, उसने कहा कि ''प्रभु में दृढ़ हो जाओ।''[1] पौलुस हमें ''कठोर होने'' या अपनी शक्ति दिखाने के लिए नहीं कह रहा था। पौलुस ने तो हमें उस बुराई से अर्थात शैतान के दुष्चक्रों का सामना करने के लिए शक्ति के एकमात्र संसाधन से लेने के लिए कहा। सरल शब्दों में कहें, तो बिना परमेश्वर की सामर्थ के हम आशाहीन हैं।

परमेश्वर की सामर्थ से हमें वही शक्ति मिलती है,जो हमें युद्ध जीतने के लिए चाहिए। पौलुस ने परमेश्वर की उस शक्ति के कारण जो हमें मिली है, उस अविश्वसनीय क्षमा की बात की। अध्याय 1 में पौलुस ने इस बात का वर्णन किया कि ''और उस की सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार। जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से'' जिलाया (1:19, 20क)। वह सामर्थ जिसने यीशु को मुर्दों में से जिलाया, हर मसीही को दी जाती है।

वह सामर्थ हमें परमेश्वर के वचन को पढ़कर अपने जीवनों में उसे लागू करने से मिलती है। जब प्रार्थना में हम परमेश्वर को ढूंढ़ते हैं तो वह हमें अपनी शक्ति देता है। उसकी आराधना करके हमें परमेश्वर की शक्ति का पता चलता है। परमेश्वर हमें साथी मसीहियों के प्रभाव, उदाहरणों तथा प्रोत्साहन से भी अपनी सामर्थ देता है। हमें हर रोज़ युद्ध की तैयारी उससे सामर्थ पाकर करनी चाहिए।

पौलुस ने विशेष तौर पर इस बात का वर्णन किया कि हम उस सामर्थ को जो परमेश्वर हमें देता है,कैसे पाते हैं: ''परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो'' (6:11क)। अनुवादित शब्द ''सारे हथियार'' यूनानी शब्द *panoplia* से लिया गया है,जिसके लिए अंग्रेज़ी शब्द ''panoply'' (अर्थात कवच) मिलता है। इसका अर्थ पूरे हथियार है। पौलुस ने उन बातों को जो उसने बहुत बार युद्ध के लिए हथियारों से लैस, शत्रु पर चढ़ाई करने वाले सिपाही में देखी थीं, आत्मिक अर्थ में इस्तेमाल किया। 6:13-20 में, उसने इस हथियार का विस्तार से वर्णन किया।

पौलुस ने ये हथियार पहनने की आज्ञा दी। उसके शब्दों के ज़ोर पर ध्यान दें। यदि हो सकता तो वह हमसे कहता, ''हथियार पहन लो। पिताओ, तुम पहन लो ताकि तुम अपने परिवारों के लिए लड़ सको। माताओ, हथियार पहन लो। नवयुवको, हथियार पहन लो ताकि शैतान तुम्हें हरा न पाए। बुज़ुर्ग मसीहियो, हथियार पहन लो। अपने सांसारिक जीवन के अंत में अपनी सुरक्षा ढीली न होने दो। लड़ाई खत्म नहीं हुई है। परमेश्वर के हथियार पहने रख।''

पौलुस ने युद्ध के उद्देश्य को इन शब्दों में बताया: ''कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको'' (6:12ख)। नशे, शराब, गंदी तस्वीरें या जुआ हमारे अंतिम शत्रु नहीं हैं। वे तो हमारे असल विरोधी द्वारा हमारे विरुद्ध इस्तेमाल किए जाने वाले उसके हथियार हैं। अपनी सारी सेनाओं को लेकर हमारे साथ लड़ने के लिए आने वाला हमारा शत्रु बहुत शक्तिशाली है! बिना परमेश्वर की सहायता से हम शैतान की मृत्यु का सामना नहीं कर सकते। शैतान अलौकिक, धूर्त, चालबाज और दुष्ट है। किसी भी मनुष्य के लिए एक

मात्र आशा यीशु के द्वारा शैतान के विरुद्ध लड़कर विजय पाना है। यीशु में परमेश्वर की सहायता के बिना कोई भी मनुष्य शैतान पर विजय नहीं पा सकता। परमेश्वर हमें शैतान को जीतने की एकमात्र आशा के रूप में अपनी शक्ति तथा हथियार देता है।

युद्ध में जाने वाले सिपाहियों के पास युद्ध नीति होनी आवश्यक है। पौलुस ने हमें एक युद्ध नीति दी है और उसने हमें बताया है कि हमें क्या तैयारी करनी चाहिए। परमेश्वर की शक्ति को नज़रअंदाज करना या उसके हथियार को न पहनने का अर्थ आत्मिक आत्मघात है। बिना परमेश्वर की शक्ति और हथियार के लड़ाई पर जाने वाले मसीही जीत नहीं पाएंगे। ''प्रभु में ... बलवंत बनो, ... परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो।'' परमेश्वर द्वारा दिया जाने वाला हर आत्मिक संसाधन इस्तेमाल करते हुए इस युद्ध की तैयारी करो। यही आपकी एक मात्र आशा है!

युद्ध जीतने के लिए शत्रु की बातों का पता होना आवश्यक है

बुद्धि कहती है कि युद्ध में जाने से पहले अपने विरोधी की कमज़ोरी का पता होना ज़रूरी है। स्पोर्ट्स टीमें अपनी विरोधी टीमों की टोह लेती हैं। सेल्स वाली टीमें बोली लगाने से पहले अपने विरोधियों के बारे में जानने का प्रयास करती हैं। सेनापति युद्ध की तैयारी करते हुए शत्रु के बारे में अधिक से अधिक जानकारी जुटाने की कोशिश करते हैं। अपने विरोधी के बारे में जानने की कोशिश करना एक निर्णायक और युद्ध जीतने की नीति है।

पौलुस ने चाहा कि मसीही लोग इस बात पर ध्यान दें कि उनका शत्रु कितना शक्तिशाली और धूर्त है। पौलुस ने ऐसा क्यों चाहा? क्योंकि यदि हम बिना तैयारी के या बिना कोई हथियार लिए अपनी निर्बल शक्ति के साथ लड़ाई लड़ने जाएंगे तो शैतान हमारा नाश कर देगा।

शत्रु के बारे में पौलुस ने तीन तथ्य बताए हैं। *पहला, हमारा शत्रु शक्तिशाली है।* आयत 12 कहती है, ''क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है...।'' पौलुस ने शत्रु को तीन ज़बर्दस्त शीर्षक दिए: ''प्रधानों,'' ''अधिकारियों,'' और ''हाकिमों।'' मुझे यह तो नहीं मालूम कि इन पदनामों को पौलुस ने ध्यान में क्यों रखा, परन्तु मैं इतना जानता हूं कि पौलुस ने कुछ ऐसे शब्दों का इस्तेमाल किया जो शत्रु की जबर्दस्त शक्ति और अधिकार की ओर हमारा ध्यान दिलाता है।

बाइबल इस दुष्ट शक्ति की कुछ गहराइयों को बताती है। जब शैतान ने कहा कि वह संसार के सारे राज्य यीशु को देने की क्षमता रखता है तो यीशु ने उसके साथ झगड़ा नहीं किया (मत्ती 4:8, 9)। यीशु ने भी शैतान को, ''जगत का सरदार'' (यूहन्ना 12:31) कहा। शैतान अपने आप को और उन सब को,जो उसकी आज्ञा मानते हैं,परमेश्वर के विरुद्ध करता रहता है। पौलुस ने शैतान को ''इस संसार का ईश्वर'' (2 कुरिन्थियों 4:4) कहा। शैतान और उसके साथी अविश्वासियों के मन अंधे करते हैं ताकि उन पर सुसमाचार के प्रकाश का कोई असर न हो। पतरस ने शत्रु की तुलना ''गर्जने वाले सिंह'' से की, जो ''इस

खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए'' (1 पतरस 5:8)। यूहन्ना ने इसके साथ जोड़ा कि ''सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है'' (1 यूहन्ना 5:19)। इसके बीच का कोई स्थान नहीं है। या तो आप प्रभु यीशु के अधीन हैं या फिर शैतान के वश में।

कोई कह सकता है, ''मैं तो सोचता था कि यीशु ने शैतान को हराकर उस पर विजय पा ली है।'' पा ली है न। परन्तु शैतान और उसके दुष्टात्माओं ने हार नहीं मानी है। उन्हें अभी पूरी तरह से हराकर नष्ट नहीं किया गया है, जिस कारण वे मनुष्यता के विरुद्ध ''ढूंढ़कर नाश'' करने के अपने मिशन में लगे हुए हैं। अभी भी लोगों के जीवनों का नाश करने की उनके पास काफी शक्ति है।

दूसरा, शत्रु दुष्ट है। हमारी लड़ाई ''उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है,जो आकाश में हैं'' (6:12)। शक्ति का इस्तेमाल बहुत भलाई या बहुत हानि पहुंचाने के लिए किया जा सकता है। हमारा शत्रु और उसके साथी अपनी शक्ति का इस्तेमाल विनाश के लिए करते हैं। वे इसे दुष्ट की दिशा में मोड़ देते हैं। वे इस अंधेरे जगत की शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अंधकार ही उनका शासन है। बेरहम और बहुत ही दुष्ट ये लोग हर सम्भव तबाही मचाते हैं।

तीसरा, शत्रु धूर्त है। आयत 11 फिर से पढ़ें। पौलुस ने ''शैतान की युक्तियों'' के विरुद्ध खड़ा रहने की बात की है। शैतान अपना परिचय देकर यह नहीं कहता, ''मैं शैतान हूं। मैं तुम्हारा जीवन बर्बाद करने और तुम्हें नरक में पहुंचाने के लिए आया हूं।'' वह कभी भी हमारे सामने सीधे नहीं आता। वह चालें चलता है। उसे झूठ पसन्द है। धोखा देने में उसे आनन्द आता है।

धोखा देने में उस्ताद हमें पाप में फंसाने के लिए,

- वह हमें विश्वास दिलाता है कि ''यह इतना बुरा नहीं है। इससे तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा,''
- हमें विश्वास दिलाता है कि किसी को पता नहीं चलेगा, और परमेश्वर हमें क्षमा कर ही देगा,
- हमें विश्वास दिलाता है कि जो करने के लिए वह हमें लुभा रहा है उससे हमें संतुष्टि ही मिलेगी,
- हमारे आत्मिक विश्वास को गिरा देता है ताकि हम परवाह न करें,
- हमें इतना अधिक थकाकर जर्जर कर देता है कि हम तुरन्त राहत चाहते हैं और उस राहत को पाने के लिए हम कुछ भी करने को तैयार होते हैं,
- हमारी सोच को बदल देता है ताकि हमें पता न चले कि सही क्या है।[2]

शत्रु धोखेबाज, धूर्त और चालाक है। वह रोशनी का फरिश्ता बनकर आता है (2 कुरिन्थियों 11:14)। उसकी चालों में कई चालाकियां शामिल हैं। उससे विरुद्ध जीतने के लिए हमें क्या अवसर मिलता है? हमारे पास अपने आप में कोई अवसर नहीं है। बिना परमेश्वर के उसके साथ लड़ने की कोशिश करने पर हम हार जाएंगे। इस बात में पौलुस की

बिनती का महत्व पता चलता है। शत्रु की शक्ति का पता चल जाने पर हमें समझ आती है कि हमें परमेश्वर की कितनी आवश्यकता है।

एक पल के लिए उठकर शत्रु के बारे में विचार करें। विचार करें कि दुष्ट शक्तियां कितनी शक्तिशाली हो सकती हैं। ध्यान दें कि शैतान इस संसार में कितनी बुराई लाया है। याद रखें कि उसकी नज़र आप पर है। वह आपको चाहता है और इतना शक्तिशाली है कि आप पर आसानी से विजय पा सकता है। दुष्टता व दुष्ट और उसके साथियों के बारे में विचार करें। वे परमेश्वर की हर बात के विरुद्ध खड़े होते हैं, और आपको अपनी ओर करना चाहते हैं। इस पर विचार करते ही, यह भी सोचें कि शत्रु कितना धोखेबाज़ है। इस युग की दुष्ट शक्तियां आपको परमेश्वर के विरुद्ध करने की पूरी कोशिश करेंगी। शत्रु की समझ आ जाने पर हमें अपनी आंखें खुली रखनी चाहिए।

सारांश

मसीही लोग शैतान के साथ युद्ध में अपने लिए परमेश्वर की युद्ध नीति का पालन करके विजयी हो सकते हैं। मैं आपसे दो काम करने के लिए कहता हूं। पहला, परमेश्वर के सामने यह मानें कि आप अकेले शैतान से लड़ने की कोशिश नहीं करेंगे। आप अकेले आत्मिक युद्ध लड़ने की कोशिश नहीं करेंगे। आप अपनी शक्ति पर निर्भर होना ऐसे छोड़ देंगे जैसे आपकी यही आवश्यकता है।

दूसरा, परमेश्वर के सामने मान लें कि आप पूरा दिन, हर दिन उससे सामर्थ मांगेंगे। उसके हथियार के लिए अपनी आवश्यकता को मान लें। परमेश्वर से आपको शक्ति देने, अपने हथियार देकर उसका इस्तेमाल करने के लिए सहायता मांगें। परमेश्वर से आपको हर रोज़ याद रखने के लिए कहें कि आप एक युद्ध में अर्थात जीवन-मरण के वास्तविक युद्ध में विजयी होने के लिए ज़ोरदार संघर्ष करने वाले के रूप में हैं और आप यीशु के साथ विजयी पक्ष की ओर होना चाहते हैं।

पौलुस के शब्दों पर एक बार फिर ध्यान दें, जिनका अनुवाद आधुनिक भाषा में इस प्रकार हुआ है:

> ... परमेश्वर सामर्थी है, और वह चाहता है कि तुम बलवंत हो जाओ। सो जो कुछ प्रभु ने तुम्हारे लिए रखा है अर्थात सर्वोत्तम सामग्री के उत्तम हथियार ले लो। और उनका इस्तेमाल करो ताकि तुम शैतान के हर बाण का मुकाबला कर सको। यह दोपहर को होने वाली खेल प्रतिस्पर्धा नहीं है जिसमें हम कुछ घंटों के लिए आराम करने के लिए निकल जाएं। यह शैतान और उसके दूतों के विरुद्ध जीवन मृत्यु का युद्ध है जो अंत तक जारी रखना चाहिए।
>
> तैयार रहो। तुम ऐसा काम करने जा रहे हो जो तुम्हारी अपनी सामर्थ से कहीं बढ़कर है। जो सहायता चाहिए, अर्थात परमेश्वर के सब हथियार ले लो जो उसने तुम्हें दिए हैं, ताकि विजयघोष के समय भी तुम अपने पांवों पर खड़े हो सको (6:10-13; TM)।

ज़्या आप यीशु के और उस सामर्थ के बिना जीने का प्रयास कर रहे हैं,जो वह मसीही लोगों को देता है ? यीशु के बिना आप विजय नहीं पा सकते। उसे ढूंढ़ो। वह आपकी सामर्थ बन जाएगा। वह आपको शैतान का सामना करने के योग्य बनाएगा। वह आपको अपनी विजय में हिस्सेदार बनाएगा।

यीशु आपको ज़बर्दस्ती कुछ नहीं देता। निर्णय लेना वह आप पर छोड़ता है। आपको अकेले अंधकार के साथ लड़ने की कोशिश जारी रखने की आवश्यकता नहीं है। यह दुष्ट संसार आपको नष्ट कर देगा। आपको यीशु की आवश्यकता है। वह आपको लेने के लिए तैयार है, परन्तु आप उससे कहने को तैयार हों, ''यीशु मुझे तेरी आवश्यकता है। तू मेरे पापों के लिए मरा। मैं अपने पापों को धोने और तुज़्हारी सामर्थ में चलने के लिए बपतिस्मा लेना चाहता हूं।''

हो सकता है कि कुछ मसीही लोग बिना परमेश्वर के हथियार पहनकर आत्मिक युद्ध जीतने की कोशिश कर रहे हों। शैतान ने आपको वहीं रख दिया है जहां वह आपको रखना चाहता है; वह चाहता है कि आप आत्मिक युद्ध की तमाम जानकारी को नज़रअंदाज कर दें। परमेश्वर की ओर मुड़ें और शैतान से कहें कि वह आपके पास से चला जाए। परमेश्वर आपको शज़्ति देने को तैयार है। उसके पास हथियार तैयार हैं। वह आपके सही निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा है।

टिप्पणियां

[1]यूनानी क्रिया *endunamoo* है। आयत 10 में यह वर्तमान, कर्मवाच्य आज्ञाबोधक के रूप में मिलता है ,जो हमें दो महत्वपूर्ण बातें बताता है। (1) ''बलवंत होना'' का अर्थ हमारी ओर से बिना रुके लगातार काम करना है; और (2) यह कुछ ऐसा है जो हम अपने ऊपर करने की अनुमति देते हैं। हमें अपने आप से शज़्ति नहीं मिलती बल्कि हम शज़्ति पाते हैं। [2]मैज़्स एंडर्स, *द गुड लाइफ: लिविंग विद मीनिंग इन ए ''नैवर-इनफ़ '' वर्ल्ड* (डैलस: वर्ड पज़्लिशिंग, 1993), 234.